(पाश की कविता)

कातिल

यह भी सिद्ध हो चुका है कि
इंसानी शक्ल सिर्फ चमचे–जैसी ही नहीं होती
बल्कि दोनों तलवारें पकड़े लाल आंखोवाली
कुछ मूर्तियां भी मोम की होती हैं
जिन्हें हल्का–सा सेंक देकर भी कोई
जैसे सांचे में चाहे ढाल सकता है
लेकिन गद्दारी की सजा तो सिर्फ एक ही होती है
मैं रोनेवाला नहीं, कवि हूं
किस तरह चुप रह सकता हूं
मैं कब मुकरता हूं कि मैं कत्ल नहीं करता
मैं कातिल हूं उनका जो इंसानियत को कत्ल करते हैं
हक को कत्ल करते हैं
सच को कत्ल करते हैं
देखो, इंजीनियरों! डाक्टरों! अध्यापकों!
अपने छिले हुए घुटनों को देखो
जो कुछ सफेद या नीली दहलीजों पर
टेकने से छिले हैं अपने चेहरे की ओर देखो
जो केवल एक याचना का बिंब है
हर छिमाही दफ्तरों में रोटी के लिए
गिड़गिड़ाता बिंब!
हम भिखारियों की कोई सुधरी हुई किस्म हैं
लेकिन फिर भी हर दर से हमें दुत्कार दिया जाता है
अपनी ही नजरों को अपनी आंखों से मिलाओ
और देखो, क्या यह सामना कर सकती है?
मुझे देशद्रोही भी कहा जा सकता है
लेकिन मैं सच कहता हूं, यह देश अभी मेरा नहीं है
यहां के जवानों या किसानों का नहीं है
और हम अभी आदमी नहीं हैं, बड़े निरीह पशु हैं
हमारे जिस्म में जोंकों ने नहीं
पालतू मगरमच्छरों ने गहरे दांत गड़ाए हैं
उठो, अपने घर के धुओं!
खाली चूल्हों की ओर देखकर उठो
उठो काम कमरनेवाले मज़दूरो, उठो!
खेमों पर लाल झंडे लहराकर
बैठने से कुछ न होगा
इन्हें अपने रक्त की रंगत दो
(हड़तालें तो मोर्चे के लिए सिर्फ कसरत होती हैं)
उठो मेरे बच्चो, विद्यार्थियो, जवानों, उठो!
देखो मैं अभी मरा नहीं हूं
यह एक अलग बात है कि मुझे और मेरे एक बच्चे को
जो आपका भी भाई था
हक के एवज में एक जरनैली सड़क के किनारे
गोलियों के पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है
आपने भी यह 'बड़ी भारी पुलिस मुठभेड़' पढ़ी होगी
और आपने देखा है कि राजनीतिक दल
दूर–दूर से मरियल कुत्ते की तरह
पल दो पल न्यायिक जांच के लिए भौंके
और यहां का कानून सिक्के का है
जो सिर्फ आग से ही ढल सकता है
भौंकने से नहीं
क्यों झिझकते हो, आओ उठें
मेरी ओर देखो, मैं अभी जिंदा हूं
लहरों की तरह बढ़ें
इन मगरमच्छों के दांत तोड़ डालें
लौट जाएं
फिर उठें, और जो इन मगरमच्छों की रक्षा करता है
हुक्म देने के लिए उस पिलपिलाते चेहरे का मुंह खुलने से पहले
उसमें बंदूक की नाली ठोंक दें!

पेज 1 का शेष भाग

बलात्कार की भी एफ आई आर दर्ज नहीं करती पुलिस

विदित है कि पुलिस एक्ट में किसी शिकायत को दर्ज न करना जुर्म है, लेकिन खबर लिखे जाने तक इस जुर्म की सज़ा किसी भी पुलिस अधिकारी को नहीं दी गयी। दी जाने की संभावना भी नहीं है क्योंकि एस एच ओ ब्रह्म सिंह पर सियासी वरद हस्त है, जिसके चलते सी पी की भी हिम्मत उसे छेड़ पाने की नहीं होती। इस तरह का यह कोई पहला मामला नहीं है जब सी पी साहव एस एच ओ के विरूद्ध कोई कदम उठाने की हिम्मत नहीं जुटा पाये। पहले भी ऐसे कई मामले सामने आ चुके हैं।

दमकल 'सेवा' एनओसी देने के लिये है, आग बुझाने के लिये नहीं

यदि हरियाणा सरकार के इस दमकल विभाग ने 1.45 पर फ़ोन सुन लिया होता तो बल्लबगढ से 10 मिनट में गाड़ियां घटना स्थल पर पहुंच सकती थी और यदि उनमें पर्याप्त पानी व अन्य आवश्यक साज सामान होता तो इस भारी भरकम नुक्सान को बचाया जा सकता था। परन्तु दमकल सेवा के नाम पर करोड़ों रुपये का विशेष टैक्स देने वाली जनता का नुक्सान बचाना इनका लक्ष्य दिखता ही नहीं। इनका लक्ष्य तो केवल मुख्यमंत्री तथा अन्य वी वी आई पी के काफ़िलों की शान बढाना है। विदित है कि उस दिन भी एक दमकल गाड़ी शहर में आये मुख्यमंत्री काफ़िले की शान बढा रही थी। कितना बड़ा दुर्भाग्य है इस देश का कि एक ओर तो संभावित आग को बुझाने के लिये दमकल गाड़ी भागी फिर रही है और दूसरी तरफ़ लग चुकी आग को बुझाने का कोई प्रबंध नहीं है।

धोखा रैली को विकास रैली बताया मुख्यमंत्री ने

मजे की बात यह है कि हर साल इसका लागत बजट बढ कर दोगुणा हो जाता है बिना कुछ करे धरे ही और उधर नगर निगम उस सड़क के रख रखाव पर जो वहां है ही नहीं, 25 लाख का खर्च दिखाकर डकार चुकी है। बदरपुर बार्डर से बल्लबगढ के सेक्टर 2 से होता हुआ मथुरा रोड से जुड़ने वाला बाई पास पिछले 25 सालों से बनता आ रहा है। इसका बजट भी अपने आप बेहिसाब बढता रहता है। तिकोना पार्क से ले कर चिमनी बार्ड धर्मशाला तक बनने वाली सड़क पिछले करीब 8 साल से बन ही रही है। इसके बनने का अंदाज इतना खतरनाक है कि आये दिन रात के अंधेरे में हादसे होते रहते हैं। बीच बीच में गड्ढे व अधबने पिलर इस तरह छोड़ दिये गये हैं कि अनजान वाहन चालक हादसे का शिकार होय ही होय। कुल मिलाकर सरकार का हर महकमा हर दफ़्तर काग़जी विकास कर के करदाता के खून पसीने की कमाई को डकारने में जुटा है और इसी काग़जी एवं फ़र्जी विकास को मुख्यमन्त्री उपलब्धि–बता रहे हैं।

राम जेठमलानी ने ठीक कहा था, 'राम एक अच्छे पति नहीं थे'

पिछले दिनों राम जेठमलानी के कहने अनुसार राम एक अच्चा पति नहीं थे। उन्होंने जो कहा सत कहा। राम सचमुच ही स्वार्थी और धोखेबाज थे, जगह–जगह पर देखा जाय स्वार्थ से भरा हुआ राम के अंदर कुटनीति है, कि उनके जीवन के चरित्र का दाग मिटाने के लिये उनका इतना बखान किया है कि इससे उनका सारा दोष छुप जाय किन्तु यह इतिहास कभी मिटने वाला तो है नही। चारों युगों तक इनका नाम और गुण का बखान चलता रहेगा। इस पर हमारे राष्ट्र कवि मैथली शरण गुप्त ने भी लिखा है कि युग–युग तक यह चलती रही कठोर कहानी। पहले तो राम के चरित्र की शुरुआत यहीं से देखिये कि यहां के पक्षियों का राजा गरूड़ जी का ऐसा कहना है कि (मदारी) बंदर की तरह रामजी सबको नचाते हैं। वेद ऐसा कहता है कि नाचहीं नर नरकट की नाई सबहीं नचावत राम गोसाई।

राम के नाम में मर्यादा पुरुषोत्तम औरं समदर्शी हैं किन्तु उनके अन्दर देखा जाय तो जगह–जगह पर कल–बल और छल से भरा है। जैसे राम ने पेड़ से छुपकर बाली का वद्ध किया, यह राम जैसे वीर पुरुषों के लिए बिल्कुल ही बड़ा अन्याय था । राम जाकर बाली से ऐसा कहते कि तुम अपने छोटे भाई सुग्रीव की पत्नी को वापस कर दो, और उसके अपने राज्य में वापस बुला लो। क्योंकि राम को बाली से कोई दुश्मनी नहीं थी। बाली ने मरते समय भी श्री राम से कहा है।

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहि व्याध की नाईं।
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा।

अत: हे राम हे गोसाई आपने धर्म की रक्षा के लिए अवतार लिया है और मुझे व्याध की तरह (छिपकर)क्यों मारा ? मैं आपका दुश्मन और सुग्रीव आपके लिए प्यारा है ? हे नाथ किस दोष के कारण आपने मुझे मारा है ? क्या राम के लिए यह उचित था ? एक वेगुनाह को इस तरह से वद्ध करना यह क्या है– शायद इसी लिये खुद राम ने कहा है कि अवध नृपति दशरथ के जाए। पुरुष सिंघ बन खेलन आये।

हम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र, वन में शिकार खेलने आये हैं। हम क्षत्री मृग्या बन करहीं यानी हम छत्री हैं वन में शिकार करते हैं। शिकार करने का अर्थ यह नहीं कि किसी निर्दोष पर बान चलाना या छत्री धर्म का अर्थ यह बिल्कुल नहीं हैं। भलेही छत्री धर्म के तरह रावण से युद्ध किया। या खरदुषण, त्रिसीरा आदि का वद्ध किया। बाली अगर राम को देख लेता तो राम का आधा बल बाली के अंदर ही आ जाता, तब तो राम के हाथ से वाली का वद्ध करना सम्भव नहीं था। शायद इसलिये छुपकड़ कायर की तरह बाली का वद्ध किया।

अब राम की धर्म पत्नी सीता के प्रति राम का व्यवहार कैसा स्वार्थ से भरा है। कि जगह जगह सीता को उपदेश देते हैं।

सीता जिस घर जन्मी पाली–पोसी गई, बड़ी हुई, विवाह के बाद सीता कभी भी अपने पिता के घर वापस नहीं गईं। जैसे शास्त्रों, पुरानों वेदों में भी है कि जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गदपि गरियसी, जिसका अर्थ मां तथा मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। जिसकी रक्षा के लिए करोड़ों स्वर्गों का त्याग किया जा सकता है। सीता का कहना है।

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी

जैसे कि बिना जीव के देह और बिना जल के नदी, है वैसे ही। बिना पती के स्त्री है। राम को लेकर सीता माता–पिता से लेकर अयोध्या के राजमहल सोना का कनक भवन (जिस में सीता रहती थी) बन्धु–बान्धव सबको त्याग कर राम के साथ बन में चली गई। वहां पर राम तो पहले ही जान गये थे कि सीता को राक्षस से डर है इसलिये पहले ही अग्नि में निवास करा दिया था। एक बार लक्ष्मण के नहीं रहने पर राम ने सीता से कहा कि

सुनहु प्रिया व्रत रूचिर सुसीला।
मैं कछु करबि ललित नर लीला।
तुम्ह पावक महुं करहु निवासा।
जौ लगि करौ निसाचर नासा।

हे सुन्द पतिव्रत–धर्म के पालन करने वाली सुशीले! सुनो मैं अब कुछ मनोहर मनुष्य की लीला करुंगा। इसलिये जब तक मैं राक्षसों का नाश करुंगा तब तक तुम अग्नि में निवास करो। राम ने जो यह लीला रची इस रहस्य को लक्ष्मण जी ने भी नहीं जाना। उसी समय सीता अपनी तरह ही रूप गुण वाली छाया वहां रख दी, और खुद अग्नि में प्रवेश कर गई। सीता को रावन के घर से आने पर जब राम के पास सीता गईं है तो उस समय राम ने सीता से कड़े बचन कहा है कि तुम चौदह महिनों तक रावण के घर में रहकर आई है, इसलिए पता नहीं तुम पवित्र हो या अपवित्र हो अत: इसलिए तुम मुझ से अलग रहो। राम के ऐसे कठोर वचन को सुनकर सीता लक्ष्मण से कहतीं हैं।

लछिमन होहु धरम के नेगी। पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी।

हे लक्ष्मण तुम मेरे धर्म के भागी बनो। (धर्मायण में सहायक) और अग्नि तैयार करो। उस समय लक्ष्मण जी राम के रुख देखकर बहुत सी लकड़ी लाकर अग्नि तैयार किये।

सीता अग्नि में प्रवेश करने से पहले अग्नि देव से ऐसा कहती है कि

जौं मन बच क्रम मम उर माहीं।
तजि रघुबीर आन गति नहीं।
तौ कृसानु सब कै गति जाना।
मो कहं होउ श्री खंड समाना।

मन, वचन और कर्म से मेरे हृदय में सिर्फ राम हैं तो मेरे लिए यह अग्नि देव चन्दन के समान शीतल हो जाए। यदि मेरे मन में राम के अलावा दुसरा कोई है तो मेरा शरीर इस अग्नि में जलकर खण्ड–खण्ड हो जाए। ऐसा कहकर सीता अग्नि में प्रवेश की। तब अग्नि देव ने शरीर धारण करके सीता जी का हाथ पकड़ उन्हें श्री राम को वैसे ही समर्पित किया जैसे क्षीर शागर ने विष्णु भगवान को लक्ष्मी समर्पीत की थीं। जब सीता का हरण ही नहीं हुआ तो अग्नि परीक्षा किस बात की ली गई, समाज को दिखाने के लिए या अपने मन को संतोष जताने के लिए।

–नीलिमा झा

मज़दूर मोर्चा

नियमित पढ़ने हेतु पाठकगण अपने हॉकर से संपर्क करें। जो हॉकर, आपके घरों में दैनिक अखबार डालते हैं, आपके आदेश पर मज़दूर मोर्चा भी डालेंगे। कोई दिक्कत हो तो दीक्षित न्यूज़ एजेंसी से 9811159238 पर संपर्क करें।

'मज़दूर मोर्चा' प्रिंटफोर्ट, नेहरू ग्राउंड पर भी उपलब्ध है।